MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318
Peer Reviewed International Refereed Research Journal

VIDYAWARTA ®

Special Issue, October 2019

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड
तथा हिंदी विभाग और IQAC
बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय
बसमतनगर, जि. हिंगोली
Accredited by NAAC B+Grade

के संयुक्त तत्वावधान
आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री चेतना

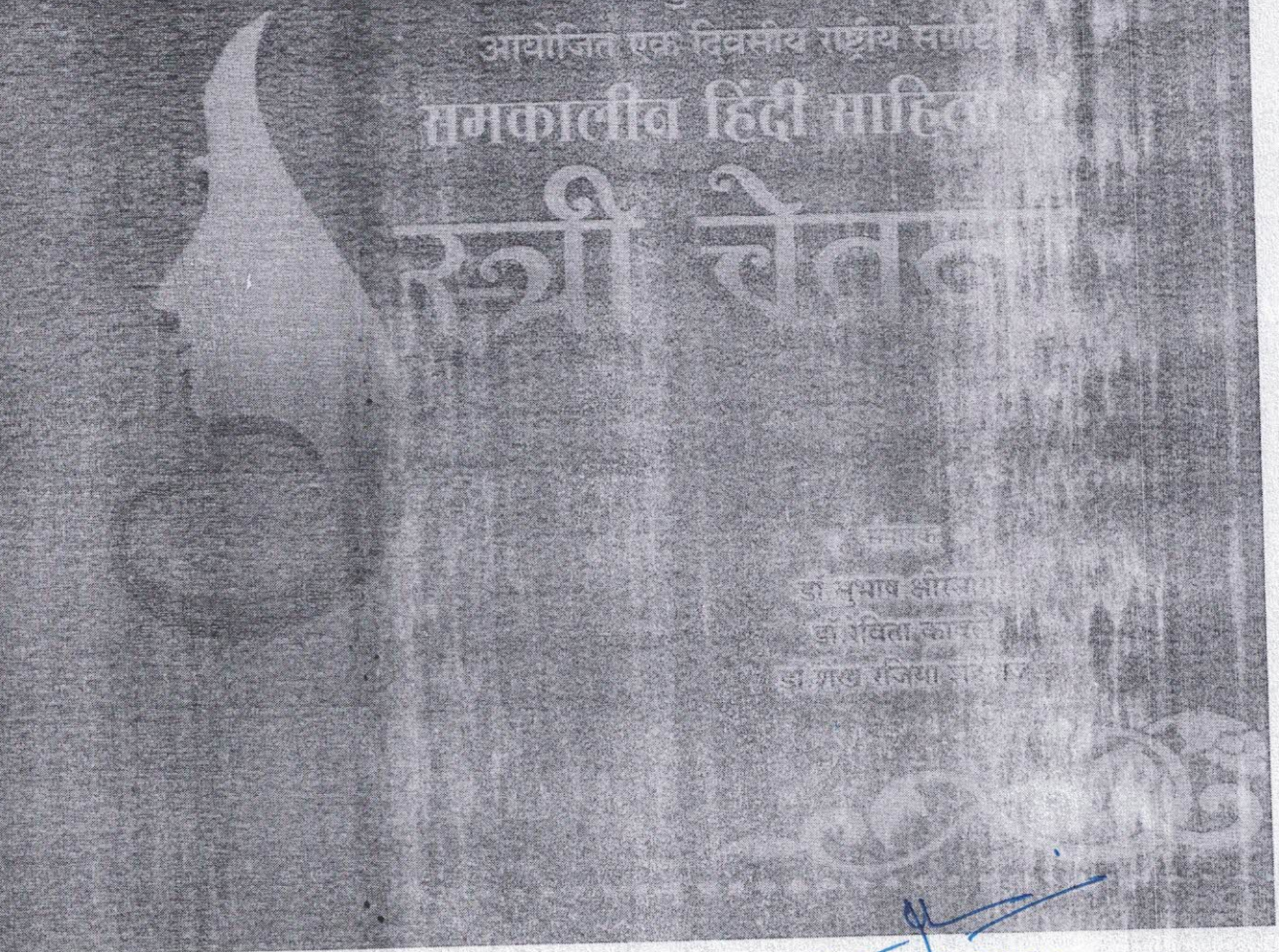

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

ADATVYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR * Dist.Nanded *

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Special Issue, October 2019

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड
तथा हिंदी विभाग और IQAC

बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय

बसमतनगर, जि.हिंगोली
Accredited by NAAC B+Grade

के संयुक्त तत्वावधान
आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्टी

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री चेतना

संपादक
डॉ.सुभाष क्षीरसागर
डॉ.रेविता कावले
डॉ.शेख रजिया शहेनाज

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Publication

October 2019
Special Issue 020

AMAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

96) हिंदी कविता में नारी चेतना ||244
प्रा. भेंडेकर एन.एस., गंगाखेड

97) समकालीन हिंदी काव्य साहित्य में स्त्री चेतना ||246
डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड, परभणी

98) प्रतिरोध केस्वर और कात्यायनी की कविता ||248
कदम गजानन साहेबराव, वर्धा

99) समकालीन कविता के कवि-रघुवीर सहाय ||251
प्रा. मंगल संभाजीराव खुपसे, हिंगोली

100) समकालीन हिन्दी दलित काव्य में स्त्री चेतना ||253
डॉ. बालाजी सोपुरे, कर्नाटक

101) समकालीन हिंदी कविता में स्त्री चेतना ||255
प्रा. डॉ. संजय गडपायले, परभणी

102) समकालीन हिंदी काव्य साहित्य में स्त्री चेतना ||257
प्रा. संग्राम सोपानराव गायकवाड, लातूर

103) समकालीन हिंदी काव्य साहित्य में स्त्री चेतना ||259
प्रा. डॉ. अशोक विश्वनाथ अंधारे, नांदेड

104) अनामिका की कविताओं में व्यक्त स्त्री संवेदना ||260
डॉ. संतोष विजय येरावार, देगलूर

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR ★ Dist.Nanded ★

समकालीन साहित्य का सृजन कर हिंदी काव्य के माध्यम से स्त्री चेतना को स्पष्ट किया है। इस संदर्भ में केदारनाथ सिंह लिखते हैं- 'इस समय सड़क पर कोई भी किसी का समकालीन नहीं है। इस दौर की कविता केवल सामूहिक रूप में ही अपना वैशिष्ट्य अर्जित कर सकी हैं। कुछ ऐसे कवि जरुर हैं जो काफ़ी हद तक या तो अपना-अपना वैशिष्ट्य पा चुके हैं या उसे पाने के लिए प्रयत्नशील हैं। यहाँ में ऐसी कविताओं के बारे में कुछ नहीं कहना चाहूँगा जो काव्यगत नवीनता के नाम पर कोरा अभ्यास मात्र होती हैं। थोड़े शब्दों में पकड़ने की कोशिश की जाए तो समकालीन कविता सक्षम, एवं सकारात्मक दृष्टि से संपन्न कविता है।' इस तरह से समकालीन हिंदी काव्य साहित्य के बारे में केदारनाथ सिंह ने अपने विचार प्रकट किए हैं। आज के आधुनिक युग के साहित्यकारों के बारें में कहा जाए तो नीलेश रघुवंशी जी का नाम मूर्धन्य रूप में लिया जाएगा। उनकी ज्यादातर कविताएँ स्त्री चेतना को दृष्टिगोचर करती है। वह कहते हैं -

'मिल जानी चाहिए अब मुक्ति स्त्रियों को।
आखिर कब तक विमर्श में रहेगी मुक्ति।
बननी चाहिए एक सडक, चलें जिस पर सिर्फ स्त्रियां ही।
बननी चाहिए एक सड़क, चलें जिस पर सिर्फ।'

इस प्रकार समकालीन हिंदी कविता साहित्य में स्त्री साहित्यकारों ने स्त्री चेतना को स्पष्ट किया है किन्तु पुरुषोंने भी अपने साहित्य से स्त्री को जागृत करने का कार्य किया है। समकालिन हिंदी काव्य साहित्य से स्त्री चेतना उभरकर सामने आती है।

संदर्भ सूची

१. कवि ने कहा (चुनी हुई कविताएँ) - निलेश रघुवंशी
२. भारतीय समाज की संरचना - डॉ. हेमलता श्रीवास्तव
३. हिंदी साहित्य का इतिहास - सं. डॉ. नगेन्द्र

❑❑❑

104

अनामिका की कविताओं में व्यक्त स्त्री संवेदना

डॉ. संतोष विजय येरावार
देगलूर महाविद्यालय, देगलूर

नारी संवेदना, दशा एवं दिशा, व्यवस्थागत त्रासदी, परिवारिक दयनीय अवस्था, सामाजिक असमानता, पुरुषी अहंकार से दबी-कुचली नारी, मानसिक एवं शारीरिक रुप से प्रताडित, एवं अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत नारी को अनामिका जी ने अपनी कविता में प्रभावी रुप से अभिव्यक्त किया है। स्त्री अपने उपर होनेवाले अन्याय, अत्याचार एवं प्रताडना के विरोध में आवाज बुलंद कर रही है। नारी परंपरागत जंजीरो को तोडकर आसमान में उडने का साहस रखती हैं। वर्तमान नारी आत्मविश्वास से लबरेज है। व्यवस्था से लोहा लेने का दमखम रखने वाली नारी अनमिका की कविता में उभरी है। नारी केवल परिवार और चार दिवारों तक सिमित न होकर राजनीति, व्यापार, शिक्षा, निर्माण, संशोान, तंत्रज्ञान, धर्म, खेल, समाजकारण, आंतरिक्ष विज्ञान, ज्योतिष, आरोग्य आदि अनेकों क्षेत्रों में अपने आपको स्थापित कर रही हैं। अनामिका ने लीक से हटकर रचनाएँ लिखी है। अनामिका समकालीन कविता की प्रमुख हस्ताक्षर हैं। सामाजिक वास्तविकताओं को उघाडने का कार्य अनामिका जी ने किया है। स्त्री जीवन में व्याप्त विकृतियों, विसंगतियों एवं विडंबनाओं को सशक्त वाणी देने का कार्य किया है।

केदारनाथ सिंह की दृष्टिमें अनामिका "स्त्री रचनाकारों में खास तौर से नारीवादी लेखन में - इधर जो प्रवृत्तियाँ दिखाई पडती है, अनामिका का काव्य व्यवहार उनसे थोडा अलग है। वे इस क्षेत्र में एक अधिक संग्रहित दृष्टिकोण की हामी दिखती है, जिसमें जीवन के विधेयात्मक तत्वों की स्वीकृति का अर्थ ज्यादा मुल्यवान है। उनकी कविताओं को ध्यान से देखा जाए तो वहाँ कुछ चीजो का स्वीकार और कुछ चीजों का एक यातना भर निषेध - ये दोनों चीजें एक साथ

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR Dist.Nanded

दिखाई पडेगी। विधी और निषेध का यह व्दंद न्याय उनके काव्य की शांत-सी दिखनेवाली सतह के नीचे एक अदृश्य हचचल की तरह हमेशा मौजूद रहता हैं।" कविता को सामाजिक दाईत्व का माध्यम अनामिका नें माना हैं। नारी की व्यथा को उघाडने का सशक्त माध्यम कविता हैं ।

भारतीय समाज और पुरुषी अहंकारी मानसिकता ने स्त्री ने उपभोग तक सिमित रखा है। स्त्री पुरुषो के लिए स्वार्थ सिध्दी का साधनमात्र हैं। स्त्री की अवहेलना, उपेक्षा, अपमान, तिरस्कार करना पुरुष अपना अधिकार समझने लगता हैं। पुरुषो की इस संकुचित एवं विकृत मानसिकता को अनामिका ने उघाडा हैं -

"पढा गया हमको जैसे पढा जाता हैं, कागज
बचों की फटी कॉपियो का
चनाजोर गरम के लिफाफे बनाने के पहले।
देखा गया हमको
जैसे की कुप्त हो उनींदे
देखी जाती हैं कलाई घडी
अलस्ससुबह अलार्म बजने के बाद।
सुना गया हमको
जैसे सुने जाते हैं फिल्मी गाणे
भोगा गया हमको
बहुत दूर के रिश्तेदारों के
दुख की तरह।
एक दिन हमने कहाँ
हम भी इंसान हैं
चीखती हुई चीं-चीं
दुश्चरित महिलाएँ, दुश्चरित्र महिलाएँ
हे परमपिताओं, परमपुरुषो
बख्शो, बख्शो, अब हमें बख्शों।"[१]

स्त्री को उपभोग करके फेकनेवाली पुरुषी विक्षिप्त मानसिकता पर करारा प्रहार अनामिका ने किया हैं। स्त्री अगर अपने अधिकारों के लिए मानवीय पशुसम व्यवहार में एवं प्रस्थापित व्यवस्था के विरोध में आवाज उठाती हैं, तो पुरुष उसे चरित्रहिन एवं कलंकित कहकर प्रताडित करता हैं। पुरुषों को स्त्री को अपने अधिन रखने में हि पुरुषत्व का अहसास होता हैं। स्त्री स्वतंत्रता की कल्पना मात्र पुरुषों को आहत करती हैं। 'हरदयाल' उपरोक्त काव्यपंक्तियो के बारे में कहते है। "स्त्री जीवन के उन अनुभवों भावो और विचारों को व्यक्त किया गया हैं, जो पुरुष सतात्मक समाज में पुरुषाधीन स्त्री अनुभव करती है। जैसे स्त्री उपेक्षित है और उसमें अपनी स्थिती को लेकर विद्रोह भाव हैं लडकियों की अपनी कोई जगह नहीं होती है। जिसकी किमत उसे चुकानी पडती है। बच्चे और प्रेमी के बीच उसका व्यतित्व विभक्त होने के कारण व आत्महत्या भी नहीं कर सकती।"[२] स्त्री का अस्तित्व समाज निर्धारित करता है, स्वयं स्त्री नहीं ईस वास्तविकता को अनामिका जी ने उघाडा हैं।

"बुझ चुकी है आखिरी चूल्हे की राख भी, और वह
अपने ही वजूद की आँच के आगे औचक हडबडी में
खुदको को ही सानती,
खुद को ही गूँधती हुई वार- बार
खुश है कि रोटी बेलती है जैसे पृथ्वी।"[३]

सदियों से स्त्री नें अपना संपूर्ण जीवन परिवार को समर्पित कर दिया है स्त्री की पहचान पुरुषों तक सिमित रखी गई है। स्त्री कोलु के बैल की तहर निरंतर परिवार सेवा में लगी रहती हैं। उसे अपने सुख-दुख के बजाय - रिवार के सुख-दुख की चिंता होती हैं। इतने समप्रण के उपरांत भी उसके हिस्से में मात्र पीडा ही आती हैं। स्त्री की इस त्रासदी को अनामिका नें अभिव्यक्त किया हैं। स्त्री को जन्म से लेकर मुत्यू तक निरंतर कठिनाईयों का सामना करना पडता हैं। स्त्री को टिशु पेपर समझने वाली विकृत मानसिकता को उघाडती अनामिका की यह कविता -

"अपनी जगह से गिरकर
कहीं के नहीं रहते
केश, औरतें और नाखून
आरंभिक पाठों का
राम, पाठशाला जा।
राधा खाना पका।
राम, आ बताशा खा।
राधा, झाडू लगा।
भैया अब सोएगा

जाकर, बिस्तर बिछा।
अहा, नया घर हैं।
राम देख, यह तेरा कमरा हैं।
और मेंरा ?
औ पगली
लडकियाँ हवा, धूप, मिट्टी होती है।
उनका कोई हार नहीं होता।"[४]

भारतीय समाज में व्यवस्था ने स्त्री के साथ सदेव भेदभाव पुर्ण व्यवहार किया हैं। वारिस पाने की लालसा नें पुरुषों को हिंस पशु बना दिया हैं। स्त्री का जन्म पुरुषों की गुलामी के लिए हुआ है यह विकृत धारना को पुरुषों ने धारन किया है। पुरुषो की वासना भरी लालसा ने स्त्रीयों को पतित एवं उपेक्षित बना दिया हैं। स्त्री अस्तित्व को भोग तक सिमित रखने का प्रयास अहंकारी पुरुषी मानसिकता व्दारा किया जा रहा हैं। काम वासना की कामना पुरुषो को चरित्रहिन, पतित, विक्षिप्त एवं विकृत बना रही है। बलात्कार, यौन शेषण, जबरन वैश्या व्यवसाय में ढकेलना, कुमारी माताओं का बढता प्रमाण आदि वासना का परिणाम हैं। एक वैश्या की विवशता को उघाडती अनामिका की यह कविता-

"एक गुफ है
मेरी नाभि के नीचे
अपनी ही खूंखरित से थके
शेर - चीते - अजगर
आते हैं, कुछ देर सोने यहाँ पर
एक नये आखेट की खातिर
जाते हैं जब अगले दिन बाहर उनके वे टुटे नाखून,
राल, कैचूल
एक अजब बहनावे से देखते है मुझे।"[५]

अपना संपुर्ण जीवन परिवार को समर्पित करने वाले स्त्री के हिस्से मात्र उत्पीडन ही आता हैं। सदैव प्रेम बॉटकर समर्पण करनेवाली नारी दु:ख के बोज से दबी हुई हैं। पति को परमेश्वर माननेवाली स्त्री को मारना, प्रताडित करना, अपमानित करना पुरुष अपना अधिकार समझता हैं। पुरुषों नें परंपरा और रिति-रिवाज के नामपर स्त्री शोषण को बढावा दिया हैं।

"खाये ही जाती हैं
शाम को सुबह तक
खूब मिर्चीदार गालियाँ
उपर से थप्पड, घुँसे, डॉट, ताने बोनस में।
बाई वन, गेट वन फ्री
और ज्यादातर तो सैम्पल मुफत बँटी वस यों ही।"[६]

भारतीय गृहिणी की दशा-दुर्दशा को अनामिका व्यक्त करती हैं। "आज तो ज्यादातर घरों में स्त्रियाँ नवस्वातंत्र्य के उल्हास में तिहरे दाईत्व निभा रही है। वे नौकरी करती हैं, गृहस्थी चलाती हैं और वच्चों को पढा-लिखाकर बडी भी वे ही करती हैं। ऐसा नहीं है कि पुरुष निखटू हैं और वे नौकरी के सिवा कुछ कर नहीं सकत, पर उन्हें चौका-चुल्हा चलाना और रोता हुआ बच्चा डुलाना हेय और उबाउ दिखता है, और शरीर - बल के अधिक्य का दावा करने के बावजूद वे स्त्रियों की तरह खट नहीं पाते। जिन घरों मे स्त्रियाँ नौकरी करती है - बिजली - पाणी -टेलिफोन का बिल जमा करवाना, बॅक-पोस्ट, ऑफीस, एल आई-सी के सारे काम, बचों के स्कुल आना-जाना, उनकी फीस भरना, आए-गए को देखना - भालना, सोदा सुलुक करना ज्यादातर उन्ही के जिम्मे रहता हैं। और इसके समर्थन में एक सीधा तर्क यह दिया जाता हैं कि अधिकारों के साथ कर्तव्य क्यों नही बढे भला।" कामकाजी महिलाओं को दोहरी पीडा और शोषण का भागीदार होना पडता हैं।

"सारा शहर चुप हैं,
धुल चुके हैं सारे चौकों के वर्तन।
बुझ चुकी है आखिरी चुल्हे की राख की भी, और वह
अपने ही वजूद की ऑच के आगे औचक हडबडी में।
खुद को ही सानती
खुद को ही गूँधती हुई बार-बार
खुश है कि रोटी बेली है जैसे पृथ्वी।"[७]

कामकाजी महिलाओं की पीडा को अनामिका ने अभिव्यक्त किया हैं। कामकाजी महिलाओं की स्थिति दो पाटों के बीच पीसनेवाले वस्तु की तरह होती है। वस्तु भी उपभोग के लिए होती एक स्त्री के समान। स्त्री संवेदना और इच्छओं को कुचलता पुरुष स्त्री अस्तित्व को नकारने नें धन्यता मानता हैं। अन्याय, शोषण, तिरस्कार और

ADARSH PARIVAR EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR Dist. Nanded

घृणा का शिकार स्त्री संघर्ष एवंम प्रतिकार के लिए लालायत हैं। स्त्री परिवर्तन की कामना करती हैं। स्त्री के अंदर दबी विद्रोही भावना को व्यक्त करते हुए चीख कविता में कवयित्री कहती हैं।

"ये किसकी योग्य की तरह पसरे है जंगल
एक चीख मेरे भी भीतर है
उसका बस चले अगर तो
मेरी पसलियाँ तोडती
निकल आए बाहर।"[८]

अत: अनामिका जी ने स्त्री जीवन के पहलुओ को सशक्त रुप से उघाडा हैं। एक और शोषित, पीडित, अपमानित, उपेक्षित स्त्री का चित्रण किया है तो दुसरी और अपने अस्तिव की लढाई लढती संघर्शरत स्त्री का। भुमंडलीकरण, उदारीकरण, एवं शहरीकरण से प्रभावित परिस्थितियों को भी अनामिका ने उभारा हैं।

अनामिका जी ने स्त्री जीवन की वास्तविकताओ को, उनके संघर्ष को, वेदना को एवं मानसिकता कों सशक्त रुप से वाणी प्रदान की हैं। परंपरा को तोडनेवाली आत्मबल से लबरेज एवं एक सशक्त नारी उनकी कविता से मुखरित हो गई है। शोषण, अन्याय अत्याचार, अवमानना उपेक्षा, एवं पुरुषी अहंकार से आहत स्त्री भी चित्रित है। डॉ. रवि रंजन अनामिका के कविता के विषय में कहते है। कहना न होगा कि परंपरा व्दारा प्रेषित व स्थापित व्यवस्था को व्यस्त करने के लिए बंधी हुई मुठ्ठी के प्रति अत्यान्तिक आकर्षण कई बार आवेश व आवेग की मुद्रा के प्रति भाऊक लगाव का आकर्षण होता है और यह अतिरिक्त भाऊक लगाव वैचारिकता के बजाय प्राय : ऐसे वैचारिक हट्टम एवं बागाडंबर को जन्म देता है, जिससे आदमियत की पहचाना धुमिल होती है। अनामिका की कविताओं में परंपरा को लेकर एक संवेदनशील अलोचनात्मक रवैया दिखाई देता हैं। उनमें वह सच्ची व वयस्कर वैचारिकता हैं जो परंपरा की खोजबीन कर उसी में से रचनात्क प्रतिराधे के सौदर्याबोधात्मक बिंदु ढूँढती हुई पाठक के साथ किसी तात्कालीक प्रभाव के बजाय बोध का रिश्ता कायम करती हैं। इसलिए उनकी कविताकी प्रकृति उन स्त्रीवादी कविताओं से नितांत भिन्न व विशिष्ट है जिनमें आतंक की हद तक यथार्थ का इस्तेमाल करते हुए पाठक को अभिभूत करने की चेष्टा की जाती हैं । ठेढ राजनीतिक शब्दावली व बडबोलापन से खुद को जाने अनजाने बचाती हुई उनकी कविताएँ कई बार अपनी जनवादीय संस्कृति से उर्जा प्राप्त कर पितृसत्ता के विरुध्द संवेदनात्क प्रतिरोध दर्ज करने के लिए अपमेय व उपमान तलाशती हैं। सामाजिक समस्याओं को निकट से देखने - दिखाने की जो रचनात्मक आतुरता उनमें है वह विचारों की टकराहट से पैदा हुई है। एक अर्थ में उनकी कविता की रचना प्रक्रिया गहरे संशय से अडिग विश्वासू की तरफ काव्य-यात्रा की प्रक्रिया है। अनामिका जी ने स्त्री लेखन को नए आयाम दिए हैं। अपनी अस्तित्व को संजोए हुए भावानाओं, एवं स्त्री जीवन की वास्तविकताओं को निभर्य होकर व्यक्त किया है।

संदर्भ :

१. स्त्री खुरकुरी हथेलियाँ, अनामिका, पृ. १३
२. अनामिका की कविताओं का सम्बोध्य - डॉ. सुमित पी.वी. पृ. ७७
३. चौका, अनुष्टुप, अनामिका, पृ. ३३
४. बेजगह, खुरदरी हथेलियाँ, अनामिका . पृ. १५
५. दुब-धान, अनामिका, पृ. ६६
६. गालियाँ सुन लेने का शील, दूब-धान- पृ. ७७
७. स्त्री-बीजाक्षर, अनामिका, पृ.२६
८. चीख, खुरदरी, हथेलियाँ, अनामिका, पृ.४३

❑❑❑

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded